International Journal of Social Science and Humanities
www.humanitiesjournals.com
Online ISSN: 2664-8628
Received: 26-01-2026, Accepted: 25-02-2026, Published: 12-03-2026
Volume 8, Issue 1, 2026, Page No. 180-186

उद्यमिता विकास कार्यक्रम भावी उद्यमियों को प्रेरणा, कार्यक्षमता तथा ज्ञानवृद्धि का तकनीक

वंदना कुमारी[1], डा० रेखा झा[2]
[1] शोधार्थी, गृह विज्ञान विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत
[2] सहायक प्राचार्य, गृह विज्ञान विभाग, नागेन्द्र झा महिला महाविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

सारांश
उद्यमी किसी भी देश की आर्थिक व औद्योगिक उन्नति का आधार है। देश की आर्थिक व सामाजिक उन्नति काफी हद तक सफल उद्यम पर निर्भर करती है। उद्यमी एक घुरी है जिसके चारों ओर सारा उद्योग घूमता है। एक उद्यम का विकास उद्यमिता विकास योजनाओं द्वारा किया जा सकता है। उद्यमिता का विकास एक आधुनिक एवं जटिल विचारधारा है। उद्यमिता विकास योजनाएं इस सोच पर आधारित है कि व्यक्तियों (उद्यमियों) का विकास के प्रति दृष्टिकोण बदला जा सके। उद्यमिता विकास कार्यक्रम मात्र प्रशिक्षण कार्यक्रम नहीं है अपितु यह एक तकनीकी है, जो भावी उद्यमियों को प्रेरणा, कार्यक्षमता तथा ज्ञान बढ़ाने में मदद करती है साथ ही उद्यमियों के रोजमर्रा के कार्यों में उनके व्यवहार व कार्य प्रणाली के सुधार में मददगार साबित होती है। उद्यमिता विकास कार्यक्रम देश के आर्थिक विकास के मार्ग को प्रशस्त करता है, ताकि उसे गरीबी, पिछड़ेपन, दरिद्रता के दुष्चक्र से मुक्त किया जा सके और देश का तीव्र गति से विकास हो सके।

मुख्य शब्द: आर्थिक आयाम, उद्यमिता विकास कार्यक्रम, औद्योगिक शिक्षण एवं प्रशिक्षण, मनोवैज्ञानिक आयाम, सामाजिक आयाम

उद्यमिता विकास कार्यक्रम से आशय उद्यमिता विकास हेतु आयोजित सभी व्यक्तिगत एवं सामूहिक, निजी क्षेत्र के या सरकारी प्रयासों से हैं। अन्य शब्दों में उद्यमिता विकास कार्यक्रम से आशय ऐसे कार्यक्रम या प्रयास से है जिसके द्वारा किसी व्यक्ति में उद्यमिता की वृत्ति का विकास किया जाता है। व्यक्ति के मन में दृढ निश्चय उत्पन्न करके उसे उद्यमिता का मार्ग अपनाने के लिये प्रेरित किया जाता है, उसकी आंतरिक शक्तियों का विकास किया जाता है ताकि वह एक सफल उद्यमि बन सके। उसे शिक्षण प्रशिक्षण देकर उसकी क्षमताओं को परिमार्जित किया जाता है, उसे बौद्धिक, तकनीकी एवं वैचारिक क्षमताओं से युक्त एवं सम्पन्न बनाया जाता है।

उद्यमिता विकास कार्यक्रम मानव संसाधन विकास का पर्याय है। उद्यमिता विकास कार्यक्रम मूल रूप से पहली पीढ़ी के उद्यमियों का निर्माण करते हैं, क्योंकि जो वंश परंपरा से व्यवसायी हैं वे व्यापार की बारीकियों से भली–भांति अवगत होते हैं, हानि सहने की क्षमता उनके आदत में शामिल होती है किन्तु जिन्होंने कभी व्यापार का संचालन करना नहीं जाना अर्थात् जो पहली बार व्यवसाय का साहस करते हैं उन्हें सफल व्यवसायी बनाना ही उद्यमिता विकास कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है।

उद्यमिता विकास कार्यक्रम का अर्थ

उद्यमिता विकास दो शब्दों का समुच्चय है–उद्यमिता एवं विकास, जिसका शाब्दिक अर्थ है उद्यमिता की वृत्ति का उत्तरोत्तर विकास। उद्यमिता विकास कार्यक्रम एक व्यापक कार्यक्रम है, जो उद्यमियों के विकास पर बल देता है। यह मानवीय संसाधन का एक अंग है। उद्यमिता विकास कार्यक्रम को निम्न प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है।

''उद्यमिता विकास कार्यक्रम से आशय किसी ऐसे कार्यक्रम से है जिसका उद्देश्य सम्भावित उद्यमियों की खोज करना, उनमें उद्यमिता की भावना विकसित करना उनमें उद्यमीय गुणों एवं कौशल का विकास करना तथा उन्हें सफलतापूर्वक अपना उपक्रम स्थापित करने में सक्रिय सहयोग प्रदान करना है।''

प्रो. उदय पारीक एवं मनोहर नाडकर्णी के अनुसार ''व्यावहारिक दृष्टिकोण से उद्यमिता के विकास से आशय उद्यमियों के विकास तथा साहसिक श्रेणी में व्यक्तियों के प्रवाह को प्रोत्साहित करने से है।''

इस प्रकार कहा जा सकता है कि उद्यमिता विकास कार्यक्रम (EDP) एक ऐसा कार्यक्रम है, जो किसी व्यक्ति के उद्यमिता, चातुर्य, अभिप्रेरणा और क्षमताओं के विकास के लिये तैयार किया जाता है, ताकि व्यक्ति उद्यमी की भूमिका का प्रभावी ढंग से निर्वाह कर सके।

उद्यमिता विकास कार्यक्रम की प्रक्रिया मूलतः क्षेत्रीय विकास, भौतिक साधनों की उपलब्धता, शिक्षण, प्रशिक्षण तथा उद्यमी के लिये व्यवसाय के लिये एक स्वस्थ वातावरण तैयार करने पर बल देती है, ताकि उद्यमियों को निरंतर आगे बढ़ने में सहायता मिल सके। उद्यमिता विकास कार्यक्रम निम्न पांच बातों पर जोर देता है–

1. भौतिक संसाधनों की उपलब्धता
2. वास्तविक उद्यमियों का चयन
3. व्यावसायिक एवं औद्योगिक शिक्षण एवं प्रशिक्षण
4. औद्योगिक इकाइयों का निर्माण और
5. क्षेत्रीय विकास नीति का निर्माण।

ये सभी बातें परस्पर एक दूसरे से संबंधित हैं। उद्यमिता कार्यक्रमों की रचना इस प्रकार से की जाती है कि वह उद्यमी को अपने उद्यम के उद्देश्यों को पूरा करने में सहायता प्रदान करें जिससे वह उद्यमी के रूप में आसानी से अपनी भूमिका का ठीक प्रकार से निर्वाह कर सके। उद्यमिता विकास कार्यक्रम एक संगठित एवं व्यवस्थित विकास कार्यक्रम है जो उद्यमिता के विकास पर बल देता है।

उद्यमिता विकास कार्यक्रमों के विभिन्न आयाम

एक उपक्रम को स्थापित करने और एक व्यक्ति को उद्यमी बनाने तथा उद्यमी को सफल बनाने में उद्यमिता विकास कार्यक्रमों का बड़ा योगदान होता है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से उद्यमिता विकास कार्यक्रम के आयामों को निम्न तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है–

1. आर्थिक आयाम
2. सामाजिक आयाम
3. मनोवैज्ञानिक आयाम

आर्थिक आयाम: उद्यमिता विकास कार्यक्रमों का मूल आधार तो आर्थिक ही है। इन कार्यक्रमों के माध्यम से नये–नये उद्यमियों का निर्माण होता है। पिछड़े क्षेत्रों में उद्यमों की स्थापना होती है. देश में औद्योगीकरण के लिये संस्थागत ढांचा विकसित करने में तथा देश का संतुलित विकास करने में सहायता मिलती है। इन्हीं कार्यक्रमों के कारण संसाधनों में गतिशीलता आती है। उद्यमिता विकास कार्यक्रमों के आर्थिक आयाम निम्नवत हैं–

- उद्यमिता विकास कार्यक्रमों से स्वरोजगार को प्रोत्साहन मिलता है जिससे बेरोजगारी की दर में कमी आती है।
- उद्यमिता विकास कार्यक्रम पिछडे क्षेत्रों में उद्यमों की स्थापना को प्रोत्साहित करता है। इस प्रकार ये कार्यक्रम देश के औद्योगीकरण के लिये संस्थागत ढांचा विकसित करने में सहायता प्रदान करता है जिससे देश का आर्थिक विकास होता है अर्थात् कुल मिलाकर आर्थिक समृद्धि में वृद्धि होती है।
- नवीन उद्यमियों की आर्थिक क्रियाओं से संपूर्ण राष्ट्र की सकल उत्पादक क्षमता में वृद्धि होती है और राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है।
- नये–नये उपक्रमों की स्थापना के कारण नवीन उत्पादन होता है जिसके फलस्वरूप उपभोक्ताओं को पहले से वस्तुएं व सेवाएं उपभोग के लिये प्राप्त हो जाती है इससे उनके जीवन स्तर में सुधार आता है।
- उद्यमिता विकास कार्यक्रम उद्यमियों की गतिशीलता में वृद्धि करते हैं। इससे नये–नये स्थानों पर नये–नये उपक्रम तथा परियोजनाएं शुरू की जाती हैं और पूंजी निर्माण को बल मिलता है।
- उद्यमिता विकास कार्यक्रम बिखरी हुई योग्यताओं को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करते हैं। यह उद्यमियों के लिये शिक्षण–प्रशिक्षण की नियोजित व्यवस्था भी करते है जिसके परिणामस्वरूप देश में विपणन एवं वितरण की दशाओं में सुधार आता है।
- उद्यमियों की विभिन्न आर्थिक क्रियाओं से विभिन्न प्रकार के करों से प्राप्त आय में वृद्धि होती है जैसे उत्पादन कर, आयकर, बिक्रीकर, सेवाकर आदि के माध्यम से देश की राजस्व प्राप्ति की क्षमता में वृद्धि होती है।

सामाजिक आयाम: उद्यमिता विकास कार्यक्रम प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से एक श्रेष्ठ समाज के निर्माण का मार्ग प्रशस्त करते हैं–

- इन कार्यक्रमों के माध्यम से एक स्वस्थ सबल एवं संचेतना से भरपूर समाज की रचना होती है।
- इन कार्यक्रमों के कारण जड़ता समाप्त होती है, समाज में स्पंदन आता है, निष्क्रियता के स्थान पर सक्रियता का प्रादुर्भाव होता है।
- जातिगत रूढ़ियां समाप्त होती है और सामाजिक समरसता बढ़ती है। इन कार्यक्रमों के माध्यम से ऐसा वातावरण बनता है कि धन्धे किसी जाति से नहीं बंधे होते हैं अपितु, उद्यमिता वृत्ति से व्यक्ति कोई भी काम शुरू करके अपनी आर्थिक सामाजिक स्थिति सुदृढ़ कर सकता है।
- उद्यमिता कार्यक्रम उद्यमियों को शिक्षण–प्रशिक्षण देकर उनमें कौशल का विकास करते हैं, उनकी सोच बड़ी होती है और समाज से संकीर्णता समाप्त हो जाती है।

मनोवैज्ञानिक आयाम: उद्यमिता विकास कार्यक्रम एक स्वस्थ रचनात्मक एवं गत्यात्मक मनोविज्ञान को जन्म देकर सकारात्मक सोच उत्पन्न करते हैं। उद्यमिता विकास कार्यक्रम काम की ओर प्रेरित करके नकारात्मक शक्तियों एवं विचारों को समाप्त करते हैं। कुछ व्यक्ति सवैतनिक कार्यों में लगे रहते हैं लेकिन उनके दिमाग में नौकरी–चाकरी करने के कारण उनके अंदर गुलामी/दासता घर कर जाती है। उद्यमिता विकास कार्यक्रमों के माध्यम से व्यक्ति कोई भी व्यवसाय करके अपना स्वयं का स्वामी बन जाता है। वह हताशा के मनोविज्ञान से उभर कर खुशध्रसन्न होता है, जो अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है।

उद्यमिता विकास कार्यक्रमों की प्रासंगिकता

भारत जैसे अति जनसंख्या वाले राष्ट्र में रोजगार के अवसर दिन–प्रतिदिन कम होते जा रहे हैं। ऐसे में उद्यमिता विकास कार्यक्रम की प्रासंगिकता काफी बढ़ जाती है ये कार्यक्रम औद्योगीकरण के मूलाधार है और बेरोजगारी निवारण का तंत्र है। उद्यमिता विकास कार्यक्रम व्यवसाय के लिये एक स्वस्थ वातावरण तैयार करने पर बल देते हैं ताकि उद्यमियों को आगे बढ़ने में मदद मिल सकें।

उद्यमिता की अवधारणा मनुष्य की मौलिक, रचनात्मक, सकारात्मक एवं सहयोगपरक वृत्तियों के सक्रिय एवं सम्यक भाव की परिणति है। अवसर की पहचान कर पहल करने की वृत्ति से प्रेरित है। उद्यमिता का औचित्य निम्न प्रमुख तत्वों से प्रमाणित होता है–

- **सफल इकाइयों की स्थापना:** उद्यमिता विकास कार्यक्रमों के माध्यम से व्यावसायिक इकाइयों को लाभप्रद बनाया जा सकता है। इन कार्यक्रमों में विकास एवं अनुसंधान पर बल दिया जाता है। व्यक्ति में आधुनिक एवं कुशल तकनीकि दक्षता प्राप्त करके व्यावसायिक सफलता की सम्भावनाएं बढ़ जाती है और वह अधिक साहस से कार्य करता है। साहसी रूग्ण इकाइयों को पुनर्जीविकरण करके सरकार के भार को कम करने के साथ–साथ राष्ट्रीय साधनों के सदुपयोग को सम्भव बनाता है। उद्यमिता ही व्यावसायिक संस्थाओं को शाश्वत जीवन प्राप्त करने वाला तत्व है।

- **साधनों का सर्वोत्तम उपयोग:** उद्यमिता राष्ट्र के उत्पादक साधनों तथा उपभोक्ताओं के मध्य सेतु निर्मित करती है। देश के प्राकृतिक एवं मानवीय साधनों जैसे कच्ची सामग्री, प्राकृतिक सम्पदा, खनिज मानवीय कौशल आदि का सर्वोत्तम उपयोग साहसिकता के विकास से ही सम्भव है। उद्यमिता विकास कार्यक्रमों के अंतर्गत उद्यमियों के शिक्षण–प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाती है। उनके कौशल में वृद्धि की जाती है। उद्यमी अपने प्रबंधकीय कौशल से अप्रयुक्त पड़े साधनों का कुशलता से प्रयोग करके राष्ट्रीय उत्पादकता में वृद्धि करता है। फ्रेंच अर्थशास्त्री जीन बाप्टिस्टे ने लिखा भी है कि उद्यमिता आर्थिक संसाधनों को निम्न उत्पादकता क्षेत्र से उच्च उत्पादकता क्षेत्रों में हस्तांतरित करती है।

- **नवाचारों को प्रोत्साहन:** उद्यमिता व्यवसाय में सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करती है परिणामस्वरूप व्यवसाय में नये–नये यंत्रों, नयी तकनीकी, उत्पादकता की नयी–नयी विधियों तथा नयी–नयी वस्तुओं के उत्पादन को प्रोत्साहन मिलता है। 'नव प्रवर्तन उद्यमिता का महानायक है'' उद्यमी व्यवसाय में प्रबंध की नवीन तकनीकों को। विकसित करते हैं। बाजार अनुसंधान के द्वारा नये–नये बाजारों की खोज की जाती है, विक्रय एवं ग्राहक संतुष्टि के लिये नये विधियों को अपनाया जाता है। नवप्रवर्तन हेतु साहसी शोध एवं अनुसंधान पर बल देते हैं।

- **तीव्र परिवर्तन एवं नवप्रवर्तन:** आज व्यावसायिक जगत में तेजी से परिवर्तन हो रहे है मशीनों, तकनीकों, यंत्रों, प्रौद्योगिकी, उत्पादन विधियों, वित्त एवं वितरण प्रणालियों में नये–नये प्रयोग एवं सुधार किये जा रहे हैं। जिसके

फलस्वरूप व्यवसाय में न केवल जटिलताएं उत्पन्न हुई हैं अपितु फर्म के लिये प्रतिस्पर्धी क्षमता को बनाये रखना भी आवश्यक हो गया है। पीटर ड्रकर ने लिखा है कि ''तीव्र परिवर्तनों एवं नवप्रवर्तन के इस युग में साहसिक योग्यता को प्राप्त किये बिना आज के व्यवसायों के लिए जीवित रहना असम्भव है। उद्यमिता विकास कार्यक्रम बिखरी हुई योग्यताओं को एक जगह एकत्र करके उनमें साहसिक योग्यता उत्पन्न करते हैं। इन कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य ही सफल साहसियों का निर्माण करना है।''

- **सामाजिक संतुष्टि:** आज विश्व के अनेक देशों में निजीकरण की प्रवृत्ति जोर पकड़ रही है। सरकार भी अपने अनेक उद्योग निजी उद्यमियों को सौंप रही है फलस्वरूप निजी व्यवसायियों पर आधुनिक, प्रगतिशील एवं अग्रवर्ती बने रहने तथा सामाजिक हितों एवं उपयोगिता पर अधिक ध्यान देने का प्रमुख दायित्व आ गया है। उद्यमिता विकास कार्यक्रमों के माध्यम से उद्यमिता का विकास करके नये मूल्यों, कार्यों, व उपयोगिताओं का सृजन करके सामाजिक संतुष्टि में वृद्धि की जा सकती है।

- **पूंजी निर्माण में सहायक:** उद्यमिता ही एक ऐसा घटक है जो देश की बचतों को उत्पादक कार्यों में विनियोजित करने में सहायक सिद्ध होता है। पूंजी निर्माण आज प्रत्येक देश की एक महत्वपूर्ण समस्या है। उद्यमी व्यावसायिक क्रियाओं में वृद्धि करके पूंजी निर्माण की दर में वृद्धि करता है। इसीलिए रेजर नस्कर्ट ने लिखा भी है कि ''विकासशील देशों में केवल साहसी ही पूंजी के अभेद्य दुर्ग को तोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है तथा पूंजी निर्माण में आर्थिक शक्तियों को गति प्रदान कर सकता है।''

- **रोजगार के अवसरों में वृद्धि:** उद्यमिता के विकास से देश में नये–नये उपक्रम स्थापित होते हैं। विद्यमान इकाइयों का विकास एवं विस्तार होता है जिसके कारण आधिकाधिक व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध होने लगता है। आज उद्यमिता विकास कार्यक्रमों के अंतर्गत व्यवसाय के क्षेत्र में कम्प्यूटर्स, उच्च तकनीकी, दूर–संचार, जैविक–इंजीनियरिंग, जीव रसायन, यंत्र मानव (Robot) आदि का प्रयोग करके नये–नये उद्योगों की स्थापना की जा रही है। रिब्सन ने लिखा भी है–विकासशील देशों में उद्यमी रोजगार के अवसर प्रदान करने वाला व्यक्ति होता है।

- **तीव्र आर्थिक विकास:** उद्यमियों की कमी आर्थिक विकास की एक प्रमुख बाधा है। उद्यमिता से व्यक्तियों में रचनात्मक मनोवृत्तियों एवं उपलब्धि–दृष्टिकोण, उद्यमशीलता की भावना का विकास होता है जिसके फलस्वरूप व्यक्ति अवसरों की खोज करते हैं तथा उनका विदोहन करने के लिये नये–नये उद्योग स्थापित करते हैं। इस प्रकार देश में औद्योगिक क्रियाओं को प्रोत्साहन मिलता है तथा आर्थिक विकास संभव होता है।

- **संतुलित विकास:** किसी भी देश के आर्थिक संगठन में तभी सुधार किया जा सकता है जब वहां के सभी क्षेत्रों में संतुलित रूप से प्रगति की जाए। उद्यमिता में विकास के फलस्वरूप नये–नये उद्योगों एवं व्यवसायों की स्थापना की जाती है जो विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त विकासात्मक अंतरों व आर्थिक पिछडेपन को दूर करने में सहायक होते हैं। उद्यमी पिछड़े प्रांतों में उद्योग स्थापित करके भारी जोखिम उठाकर आर्थिक असमानता को कम करते हैं। प्रो. नर्कसे का कथन है कि ''उद्यमी संतुलित आर्थिक विकास के मार्ग प्रशस्त करते हैं।'' इस प्रकार विकसित देश भी पिछड़े हुए राष्ट्र में उपक्रम स्थापित करके औद्योगिक एवं व्यावसायिक विकास को प्रोत्साहित कर सकते हैं।

- **उद्यमी प्रवृत्तियों का विकास:** उद्यमिता विकास के परिणामस्वरूप व्यक्तियों में रचनात्मक तथा सृजनात्मक प्रवृत्तियों का विकास होता है और व्यक्तियों में आत्मनिर्भर बनने, स्वतंत्र जीवन जीने तथा कुछ प्राप्त करने की प्रवृत्तिया विकसित होने लगती हैं व्यक्ति आलस्य व अकर्म को छोड़कर सुखी व सम्पन्न जीवन जीने की ललक से भर उठते हैं। संपूर्ण समाज में सक्रियता का संचार होता है तथा एक सुखी व सम्पन्न समाज की स्थापना होती है।

- **आर्थिक सामाजिक समस्याओं में कमी:** उद्यमिता के विकास से व्यावसायिक प्रवृत्तियों व उद्योग–धंधों को प्रोत्साहित करके आय, बचत एवं पूंजी निर्माण में वृद्धि की जा सकती है जिसके फलस्वरूप अनेकों आर्थिक सामाजिक समस्याओं जैसे सामाजिक अपराध, बेरोजगारी, गरीबी, अशिक्षा, महिला अत्याचार, बालश्रम शोषण, निम्न जीवन स्तर आदि से छुटकारा मिलता है। इसके अतिरिक्त साहस के विकास से देश के विभिन्न भागों में उपक्रमों का प्रसार करके शहरों में व्याप्त समस्याओं, जैसे प्रदूषित वातावरण, भीड़भाड, गन्दी बस्तियों, वर्ग संघर्ष आदि को भी कम किया जा सकता है। एडम्स ने लिखा भी है कि ''उद्यमिता समाज के विभिन्न भागों में व्यापक आर्थिक असंतुलन का एक मात्र उपचार है।''

- **सामाजिक उत्तरदायित्व:** व्यवसाय में बढ़ रहे नवप्रवर्तन के फलस्वरूप आज अनेक पुराने व्यवसाय नष्ट होते जा रहे हैं उनका स्थान कम्प्यूटरों एवं नवीन तकनीकी से संचालित उद्योग ग्रहण करते जा रहे हैं। शुम्पीटर ने इस स्थिति को रचनात्मक विनाश' कहा है किन्तु इस स्थिति ने इस समाज में बेरोजगार, आर्थिक स्थिरता, सामाजिक व्यवस्था तथा राजकीय उत्तरदायित्व की दृष्टि से एक सामाजिक खतरा उत्पन्न कर दिया है। ड्रकर लिखते हैं कि आज उद्यमिता का विकास करना स्वयं व्यवसाय के हित में नहीं है अपितु यह उसका एक सामाजिक उत्तरदायित्व बन गया है। साहस के विकास द्वारा समाज में आर्थिक व्यवस्था को उत्त्पन्न किया जा सकता है।

- **आत्मनिर्भर समाज की स्थापना:** उद्यमिता आर्थिक विकास की श्रृंखला–प्रतिक्रिया के द्वारा किसी भी राष्ट्र को आत्म निर्भरता की दहलीज तक पहुंचा देती है। उद्यमिता द्वारा उत्पादकता में क्रान्ति लायी जा सकती है। उद्यमियों के द्वारा राष्ट्र आवश्यकताओं की पूर्ति करने के साथ–साथ निर्यातों में भी वृद्धि की जा सकती है। इसके अतिरिक्त। पूंजी, रोजगार, धन सम्पदा तथा आय में भी वृद्धि सम्भव होती है।

- **राजकीय नीतियों के क्रियान्वयन में योगदान:** उद्यमिता देश की विकास योजनाओं को पूरा करके आयात–निर्यात में संतुलन स्थापित करने तथा नियोजित विकास को प्रोत्साहित करने में सरकार की सहायता करती है। उद्यमी राजकीय नीतियों के क्रियान्वयन एवं राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ति में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। उद्यमी सरकार के साथ संयुक्त रूप से मिलकर विकास के मार्ग को प्रशस्त करते हैं।

- **सामाजिक परिवर्तनों का उपकरण:** उद्यमिता सामाजिक परिवर्तनों का एक महत्वपूर्ण उपकरण भी है। नये–नये

आविष्कारों तथा वैज्ञानिक प्रविधियों के परिणामस्वरूप समाज में अंधविश्वास कम होता है। समाज कर्मठता एवं उद्यमशीलता के एक नये परिवेश में प्रवेश करता है, शिक्षा एवं ज्ञान का प्रसार होता है। समाज रूढ़ियों एवं घिसी–पिटी परम्पराओं से मुक्त होता है समाज में नयी चेतना आती है। इसी आधार पर जेनाल्ड बीथोन ने लिखा है–उद्यमिता सामाजिक रूपांतरण एवं सामाजिक संस्कृति की स्थापना का महत्वपूर्ण आधार है।

उद्यमिता विकास कार्यक्रम के उद्देश्य

उद्यमिता विकास कार्यक्रम का प्रारंभ जन सामान्य को उद्यमी बनाने के लिये हुआ है इस कार्यक्रम के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. **स्वरोजगार की पद्धति को प्रोत्साहित करना:** इन कार्यक्रमों का प्रमुख उद्देश्य व्यक्तियों को नौकरी देने के स्थान पर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना है। जीवन यापन के लिये प्रायः दो ही विकल्प होते हैं–

1.1. सवेतन रोजगार

1.2. स्वरोजगार

सवेतन रोजगार के अंतर्गत व्यक्ति अपने शारीरिक एवं मानसिक श्रम को बेचकर धन अर्जित करता है इसमें व्यक्ति को अपने मालिक से क्षमताओं के आधार पर सेवाओं के बदले एक निश्चित वेतन प्राप्त होता है जबकि स्वरोजगार के अंतर्गत व्यक्ति अपना स्वामी स्वयं होता है और अपने व्यवसाय के माध्यम से अन्य लोगों को रोजगार प्रदान करता है। उद्यमी स्वतंत्र होकर कार्य करता है और अपने अंदर विभिन्न योग्यताओं व क्षमताओं को विकसित करने का अवसर प्राप्त करता है। उद्यमिता विकास कार्यक्रमों के माध्यम से व्यक्ति में स्वरोजगार की भावना को विकसित किया जाता है।

1. **एक सफल उद्यमी का निर्माण करना:** उद्यमिता विकास कार्यक्रमों का एक मात्र उद्देश्य एक सफल उद्यमी का निर्माण करना है इसीलिए विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से उनमें वे सभी गुण विकसित करने का प्रयास किया जाता है जो एक सफल उद्यमी में होने चाहिए। जैसे अवसरों की पहचान, साहस, दृढ निश्चय, जोखिम उठाने की मानसिकता, निर्णय की क्षमता, नवाचार, रणनीति एवं रणकौशल से भरी हुई दृष्टि तथा आत्मविश्वास आदि। उद्यमिता विकास कार्यक्रम मिट्टी में सोना उगाने की क्षमता को विकसित करने का सामर्थ्य रखते हैं।

2. **प्रथम पीढ़ी के व्यवसायी एवं उद्योगपतियों का निर्माण:** उद्यमिता विकास कार्यक्रमों के माध्यम से प्रथम श्रेणी के उद्योगपतियों को तैयार किया जाता है। व्यापारी के पुत्र में स्वतः व्यापारी बनने की प्रवृत्ति होती है लेकिन जिन घरों में व्यापार–उद्योग का वातावरण ही न हो उन युवकों को व्यवसायी/उद्योगपति बनने की प्रेरणा देना ही उद्यमिता विकास कार्यक्रमों का उद्देश्य है।

3. **उपलब्ध संसाधनों के विषय में जानकारी प्रदान करना:** प्रत्येक भू–भाग पर कुछ विशेष प्रकार के साधन होते हैं तरह–तरह का कच्चा माल प्रकृति तथा मनुष्यों द्वारा उत्पादित पदार्थों के रूप में पाये जाते हैं जिसे पक्के माल के रूप में परिवर्तित करके उपयोगी बनाया जा सकता है। उद्यमिता विकास कार्यक्रमों के माध्यम से लाभार्थियों को ऐसे उपलब्ध संसाधनों जैसे कच्चा माल, श्रम, तकनीक एवं प्रौद्योगिकी की सूचना उपलब्ध करायी जाती है।

4. **सरकारी योजनाओं एवं कार्यक्रमों की जानकारी प्रदान करना:** सरकार समय–समय पर जन कल्याण के लिये विभिन्न योजनायें बनाती है जिनमें से अनेक योजनाओं का उद्देश्य स्वरोजगार को बढ़ावा देना होता है। उद्यमिता विकास कार्यक्रमों के माध्यम से उद्यमियों को ऐसी योजनाओं की जानकारी उपलब्ध करायी जाती है कि सरकारी योजनाओं का किस प्रकार प्रयोग किया जाए। आजकल सरकार द्वारा मेक इन इण्डिया तथा कौशल विकास जैसी स्वरोजगार के लिये तकनीकी प्रेरित योजनाएं चलाई जा रही हैं। सरकार स्वरोजगार के लिये तकनीकी प्रौद्योगिकी वित्त की सुविधा सुलभ कराती है उद्यमिता विकास कार्यक्रम इन सुविधाओं की जानकारी देकर प्रथम श्रेणी के व्यवसायियों को जन्म देते हैं।

5. **व्यापार संचालन का प्रशिक्षण देना:** व्यापार संचालन एक कला है। उद्यमिता विकास कार्यक्रमों के माध्यम से उद्यमियों को सिखाने का प्रयास किया जाता है कि व्यापार के सभी घटकों को किस प्रकार संतुलित किया जा सकता है। व्यापार का संचालन किस प्रकार किया जाए ताकि लाभकारी सिद्ध हो सके। व्यापार से संबंधित विभिन्न पक्षकारों में मधुर सबंध किस प्रकार बनाये जाए, वित्त सम्भरणकर्ता, कच्चे माल के आपूर्तिदाताओं श्रमिकों व व्यापारियों से किस प्रकार का व्यवहार किया जाए, उद्यमिता विकास कार्यक्रमों के माध्यम से इन सभी प्रश्नों के उत्तरों से अवगत कराया जाता है। उद्यमिता विकास कार्यक्रमों के माध्यम से केवल निर्देशित ही नहीं किया जाता अपितु सघन प्रशिक्षणों का भी आयोजन किया जाता है।

6. **विपणन संबंधी जानकारी:** किसी भी व्यापार की वास्तविक सफलता उसकी विक्रय शक्ति पर निर्भर करती है क्योंकि संसाधनों को एकत्र करके उत्पादन प्रक्रिया प्रारंभकरके उत्पादन करना तो सरल होता है। वास्तविक समस्या तो उत्पादित माल को बाजार में बेचते समय आती है। इन कार्यक्रमों के माध्यम से उद्यमी द्वारा उत्पादित माल के विक्रय के लिये बाजारों की जानकारी दी जाती है तथा प्रतिस्पर्धा के इस युग में माल को विक्रय करने के कौशल भी सिखाये जाते हैं तथा विक्रय की समस्त नीति सिखायी जाती है और इस प्रकार उद्यमी में सफल विक्रेता के भी गुण उत्पन्न किये जाते हैं।

7. **उद्यमियों की शंकाओं व समस्याओं का समाधान:** नये उद्यमियों के मन में अनेक शंकाएं होती हैं। उन्हें उद्यम की स्थापना एवं संचालन में नाना प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है उन समस्याओं का समाधान करना तथा शंकाओं को मिटाना इन कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य होता है। विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों को कार्यक्रमों में आमंत्रित किया जाता है जो अपनी–अपनी योग्यता के आधार पर इन समस्याओं का निदान एवं उपचार करते हैं।

8. **लघु एवं कुटीर उद्योगों का प्रवर्तन:** उद्यमिता विकास कार्यक्रमों का उद्देश्य सम्पर्क क्षेत्र में उपलब्ध कच्चे माल, श्रम एवं तकनीक आदि संसाधनों के माध्यम से कुटीर एवं लघु उद्योगों की स्थापना करने की प्रेरणा देना है।

उद्यमिता विकास कार्यक्रम के संचालन हेतु स्थापित संस्थान

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व औद्योगिक विकास कुछ शहरों तथा कुछ घरानों तक ही सीमित था। सरकार ने क्षेत्रीय विकास के उद्देश्य से औद्योगिक रूप से पिछड़े व ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न सुविधाएं देकर विकास को बढ़ावा देने का निर्णय लिया। इस उद्देश्य की

पूर्ति के लिए केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा विभिन्न संस्थानों का गठन किया गया। इन संस्थानों ने भारत में औद्योगिक विकास एवं उद्यमिता विकास कार्यक्रमों के संचालन एवं संगठन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। इनमें प्रमुख संस्थान निम्नलिखित हैं–

केन्द्रीय स्तर के संगठन

उद्यमिता विकास कार्यक्रम के लिए अनेक केन्द्रीय स्तर के संगठन की स्थापना की गई है। ये अग्रांकित हैं–

- लघु उद्योग विकास संगठन (SIDO),
- राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम लिमिटेड (ASIC),
- अखिल भारतीय लघु उद्योग बोर्ड,
- प्रबंधकीय विकास संस्थान,
- भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान,
- लघु उद्योग सेवा संस्थान,
- राष्ट्रीय लघु उद्योग विस्तार प्रशिक्षण संस्थान,
- राष्ट्रीय उद्यमिता एवं लघु व्यवसाय संस्थान,
- राष्ट्रीय अनुसंधान एवं विकास निगम,
- भारतीय राज्य व्यापार निगम लिमिटेड,
- राष्ट्रीय उद्यमिता विकास मण्डल,
- जोखिम पूँजी एवं प्रौद्योगिकी वित्त निगम लिमिटेड,
- निर्यात संवर्द्धन परिषद्
- खादी एवं ग्रामोद्योग इत्यादि।

राज्य स्तर के संगठन

राज्यों में उद्यमियों की सहायता के लिए सरकारों ने विभिन्न संगठन स्थापित किये हैं। राज्यों में उद्यमियों की सहायता के लिए निम्न संगठन कार्यरत हैं–

- राज्य लघु उद्योग निगम,
- उद्योग निदेशालय,
- जिला उद्योग केन्द्र,
- राज्य वित्तीय निगम,
- प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण मण्डल इत्यादि।

उद्यमिता विकास कार्यक्रम की भूमिका

कोई भी देश चाहे विकसित हो या विकाशील, सभी के आर्थिक एवं औद्योगिक विकास में उद्यमिता विकास कार्यक्रमों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य विभिन्न क्षेत्रों में उद्यमिता के अवसर उपलब्ध कराना, उद्यमियों को उद्योग स्थापित करने के लिये प्रेरित करना, उन्हें संगठन स्थापित करने के योग्य बनाना है। देश की आर्थिक उन्नति सफल उद्योग पर निर्भर करती है। सफल उद्योग के लिये अच्छे, संगठित व नियमबद्ध उद्यमिता विकास कार्यक्रम महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। ये कार्यक्रम प्रतिभागियों में आत्मविश्वास पैदा करते हैं ताकि वे व्यापार में आने वाली नित नयी चुनौतियों का सामना कर सकें। विभिन्न क्षेत्रों में उद्यमिता विकास कार्यक्रम की भूमिकाएं अग्रलिखित हैं–

- **उद्यमिता के गुणों का विकास करना:** उद्यमिता के सभी गुण व्यक्ति में स्वतः नहीं पाये जाते हैं। प्रत्येक व्यक्ति में दो प्रकार के गुण पाये जाते हैं (1) आंतरिक गुण एवं (2) बाहरी गुण। आंतरिक गुण (उद्यमी) व्यक्ति को विरासत में मिलते हैं जैसे–ईमानदारी, निष्ठा, परिश्रम करना आदि। बाहरी गुण व्यक्ति समाज में रहकर सीखता है इन्हें शिक्षण, प्रशिक्षण एवं अनुभव द्वारा सीखा जा सकता है। उद्यमिता विकास कार्यक्रम व्यक्ति/उद्यमी को इन बाहरी गुणों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

- **गरीबी एवं बेरोजगारी निवारण में योगदान:** विकासशील देशों में निरंतर बढ़ती हुई बेरोजगारी एक गम्भीर समस्या बनती जा रही है। उद्यमिता विकास कार्यक्रम बेरोजगारों को अपने उपक्रम स्थापित करने के लिये प्रेरित करते हैं। ये कार्यक्रम उन्हें स्वरोजगार स्थापित करने के लिए सक्षम भी बनाते हैं इससे न केवल उद्यमी को। रोजगार प्राप्त होता है अपितु दूसरों के लिये भी रोजगार के अवसर पैदा होते हैं।

भारत में गरीबी उन्मूलन व बेरोजगारी को दूर करने के लिए कई कार्यक्रम चलाये गये हैं जैसे–राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम, प्रधानमंत्री रोजगार योजना, जवाहर रोजगार योजना, स्वर्ण जयंती शहरी रोजगार योजना, राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम आदि।

- **पूंजी निर्माण:** पूंजी सभी प्रकार की आर्थिक क्रियाओं का जीवन रक्त है और आर्थिक उन्नति के लिए आवश्यक है। किसी भी देश का आर्थिक एवं औद्योगिक विकास पूंजी विकास/निर्माण की गति पर निर्भर करता है। पूंजी किसी भी संगठन के विकास व स्थापना का आधार है। एक उद्यमी उत्पादन के तत्वों का प्रबंध करके अपने वित्तीय संसाधनों का प्रयोग संगठन की स्थापना व विकास के लिए करता है। वह लोगों की बचतों को गतिशील बनाता है। उद्यमिता विकास कार्यक्रम पूंजी निर्माण को गति प्रदान करते हैं। उद्यमिता विकास कार्यक्रम पूंजी निर्माण में निम्न प्रकार से सहायक होता है–
- देश की छोटी–छोटी बचतों को एकत्र करके उन्हें उत्पादक कार्यों में विनियोजित करता है।
- नये उद्योगों की स्थापना, उनके विकास एवं विस्तार में सहायक होता है।
- रोजगार, आय एवं बचत में वृद्धि।
- व्यावसायिक क्रियाओं में वृद्धि करके पूंजी निर्माण में वृद्धि करना आदि।

- **परियोजना एवं उत्पाद के वयन में सहायक:** परियोजना से आशय पूंजी विनियोजन के लिये किसी भी अवसर से है जिसमें लाभ अर्जन की सम्भावनाएं स्पष्ट रूप से दिखायी देती हो और उत्पाद चयन का आशय उत्पाद के संबंध में संशोधन अथवा उत्पाद निर्माण संबंधी निर्णय से है। उद्यमिता विकास कार्यक्रम विभिन्न परियोजनाओं व उत्पादों का मूल्यांकन करके उनमें से सर्वश्रेष्ठ परियोजना एवं उत्पाद का चयन करने में सहायता प्रदान करता है।

- **परियोजना निरूपण में सहायक:** एक परियोजना का चयन करने के पश्चात् उसका तकनीकी एवं वित्तीय विश्लेषण करना आवश्यक होता है। थोड़ी सी भी लापरवाही होने पर उद्यमी को भारी हानि उठानी पड़ती है उद्यमिता विकास कार्यक्रम परियोजना के निरूपण में सहायता प्रदान करता है। यह कार्यक्रम परियोजना से सम्बन्धित यंत्र एवं मशीन, कच्चा माल, उत्पादन तकनीक, भूमि एवं भवन अभिन्यास, श्रम स्रोत, वित्तीय स्रोत, किस्म नियंत्रण, संरचनात्मक सुविधाओं तथा विपणन सुविधाओं आदि के बारे में आवश्यक सूचना प्रदान करते हैं।

- **उपक्रम की स्थापना में सहायक:** किसी भी नये उपक्रम की स्थापना करना अत्यंत कठिन एवं जोखिमपूर्ण कार्य है। इसके लिए विभिन्न क्रियाएं सम्पन्न करनी पड़ती हैं थोड़ी सी भी चूक हो जाने पर सारा काम बिगड़ सकता है। नये

उपक्रम की स्थापना में उद्यमिता विकास कार्यक्रम ही सहयोग प्रदान करते हैं। ये उपक्रम के लिये वित्तीय सहायता, आधारभूत सुविधाएं, मूल्यवान कच्चा माल, संरचनात्मक सुविधाएं, तकनीकी ज्ञान, यंत्र एवं सामग्री की पूर्ति, शक्ति की पूर्ति, नये बाजारों की खोज आदि के बारे में आवश्यक सूचनाएं उपलब्ध करवाते हैं।

- **संतुलित क्षेत्रीय विकास:** विकासशील देशों में गरीबी, बेरोजगारी जैसी एक अन्य समस्या संतुलित क्षेत्रीय विकास की भी होती है। उद्यमिता विकास कार्यक्रम संतुलित क्षेत्रीय विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत जैसे देश में एक ओर महाराष्ट्र, पंजाब एवं गुजरात जैसे विकसित क्षेत्र हैं और दूसरी ओर बिहार, उड़ीसा, राजस्थान आदि विकास की दृष्टि से काफी पीछे है। उद्यमिता विकास कार्यक्रम पिछड़े क्षेत्रों में लघु इकाइयां स्थापित करने में मदद करता है, यह औद्योगीकरण को प्रोत्साहित करता है तथा आर्थिक सत्ता के केन्द्रीकरण को रोकता है। पिछड़े क्षेत्रों में उद्यमियों को विभिन्न सरकारें करों में छूट देती हैं, सब्सिडी देती है जिससे इन क्षेत्रों में औद्योगीकरण को गति मिलती है और राष्ट्र के संतुलित विकास में भी सहायता मिलती है।

- **औद्योगिक गन्दी बस्तियों की रोकथाम:** औद्योगिक रूप से विकसित क्षेत्रों में आवासों की कमी के कारण औद्योगिक बस्तियों का लगातार पनपना एक बड़ी समस्या है। इससे कई अन्य समस्याओं का जन्म होता है जैसे प्रदूषण, नैतिक पतन, स्वास्थ्य में गिरावट, अपराध प्रवृत्ति में वृद्धि आदि। कानपुर में अहाते, मुम्बई में 'चाल, चेन्नई की चेरी और दिल्ली की गंदी बस्तियां भारतीय सभ्यता पर कलंक हैं। इनका प्रमुख कारण असंतुलित औद्योगिक विकास है क्योंकि पिछड़े क्षेत्रों से लोग औद्योगिक क्षेत्रों की ओर बढ़ते हैं। उद्यमिता विकास कार्यक्रम इन गंदी बस्तियों का उन्मूलन करने में सहायता प्रदान करता है। वह उद्यमियों को विभिन्न प्रेरणाएं, अनुदान तथा आधारभूत सुविधाएं प्रदान करके, शिक्षण–प्रशिक्षण देकर अपने उद्योग इन क्षेत्रों में लगाने के लिए प्रेरित करते हैं जिससे समस्या के निवारण में मदद मिलती है।

- **सामाजिक तनाव में कमी:** सामाजिक तनाव का प्रमुख कारण बेरोजगारी है। यदि किसी युवक को अपना शिक्षण–प्रशिक्षण कार्य पूरा करने के बाद रोजगार नहीं मिलता है तो उसके मन में तनाव उठना स्वाभाविक है। यह तनाव समाज में कई कुरीतियों को जन्म देता है। उद्यमिता विकास कार्यक्रम के माध्यम से इन नवयुवकों को स्वरोजगार की ओर आकर्षित करने में सहायता दी जा सकती है जिससे रोजगार के तो अवसर पैदा होंगे ही. समाज भी निराशा एवं तनाव से मुक्त हो सकेगा।

- **उपलब्ध स्थानीय साधनों का उपयोग:** प्रत्येक स्थान पर उत्पादन के साधन उपलब्ध रहते हैं जिनके विदोहन से आर्थिक विकास एवं औद्योगीकरण सम्भव होता है। उद्यमिता विकास कार्यक्रम अपने विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से उद्यमियों को स्थानीय संसाधनों का उपयोग करने में मदद करता है। इन संसाधनों का सही ढंग से उपयोग होने से इन क्षेत्रों का विकास स्वतः ही हो जाता है।

- **जीवन स्तर में सुधार:** उद्यमिता विकास कार्यक्रम नये संगठन स्थापित करने में सहायता करता है जिससे उत्पादन एवं रोजगार के अवसरों में वृद्धि होती है। आय में वृद्धि होती है जिससे पूंजी निर्माण में वृद्धि होती है, वस्तुओं एवं सेवाओं का प्रसार होता है। प्रतिस्पर्धा बढ़ती है कीमतें कम होती हैं। ग्राहक को कम कीमत पर बेहतर सामान उपलब्ध होता है जिससे लोगों के जीवन स्तर में सुधार आता है।

- **विविध:** उपरोक्त के अतिरिक्त उद्यमिता विकास कार्यक्रम की भूमिका निम्न क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण है–

1. उद्यमिता विकास कार्यक्रम राज्य के आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं से मुक्ति दिलाने में सहायता प्रदान करते हैं।
2. उद्यमिता विकास कार्यक्रम देश में उपयुक्त औद्योगिक वातावरण तैयार करने में सहायता प्रदान करते हैं।
3. उद्यमिता विकास कार्यक्रम सरकार की आर्थिक नीतियों एवं कार्यक्रमों के सफलतापूर्वक क्रियान्वयन में योगदान प्रदान करते हैं।
4. उद्यमिता विकास कार्यक्रम देश–विदेश में नये–नये बाजारों की खोज करने में सहायता प्रदान करते हैं।
5. उद्यमिता विकास कार्यक्रम देश की युवा पीढ़ी को उद्यमिता की ओर आकर्षित करते हैं।
6. उद्यमिता विकास कार्यक्रम प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधनों का कुशलतम उपयोग सम्भव बनाते हैं।

उद्यमिता विकास कार्यक्रमों की उपलब्धियां

पिछले कुछ वर्षों में औद्योगीकरण काफी तीव्र गति से हुआ है। ये आधुनिक औद्योगीकरण उद्यमिता विकास कार्यक्रमों की ही देन है। उद्यमिता विकास कार्यक्रम आर्थिक विकास का अनिवार्य अंग है। उद्यमिता विकास कार्यक्रम की प्रमुख उपलब्धियां निम्नलिखित हैं–

- **तीव्र औद्योगीकरण:** उद्यमिता विकास कार्यक्रम की सबसे बड़ी उपलब्धि न केवल किसी देश में औद्योगीकरण की पृष्ठभूमि तैयार करना है अपितु उसमें तीव्रता भी प्रदान करना है।

- **बेरोजगारी की समस्या का समाधान:** अल्पविकसित एवं विकासशील देशों में सबसे बड़ी गम्भीर समस्या निरंतर बढ़ती बेरोजगारी है। उद्यमिता विकास कार्यक्रमों ने विभिन्न स्वरोजगार योजनाएं लागू करके तीव्र औद्योगीकरण को बल दिया है जिससे इस समस्या के समाधान में कुछ हद तक सफलता मिली है।

- **नवीन उपक्रमों की स्थापना एवं विस्तार:** उद्यमिता विकास कार्यक्रमों की तीसरी बड़ी उपलब्धि नवीन उपक्रमों की स्थापना एवं विकास करना है। वास्तव में वर्तमान गलाकाट प्रतियोगिता एवं मंदी के इस युग में उपक्रम की स्थापना एवं विस्तार करना जोखिमपूर्ण कार्य हैं। उद्यमिता विकास कार्यक्रमों के माध्यम से एक ओर शिक्षण–प्रशिक्षण के द्वारा उद्यमी में विभिन्न गुणों का विकास किया दूसरी ओर उपक्रम की स्थापना एवं विस्तार के लिये विभिन्न संसाधन भी जुटाएं हैं।

- **परियोजना निरूपण:** अल्पविकसित एवं विकासशील देशों में संसाधनों की कमी के कारण परियोजना का चुनाव करने में काफी कठिनाई होती है। परियोजना का चयन काफी सावधानीपूर्वक ढंग से करना होता है ताकि संसाधनों की कमी के कारण परियोजना को बीच में न छोड़ना पड़े। उद्यमिता विकास कार्यक्रम के अंतर्गत शिक्षित प्रशिक्षित उद्यमी तकनीकी एवं वित्तीय दृष्टिकोण से परियोजना का मूल्यांकन एवं विश्लेषण करता है। उद्यमी इस कार्य का सम्पादन सरलता से कर लेता है।

- **उद्यमिता शिक्षण एवं प्रशिक्षण:** शिक्षण–प्रशिक्षण की व्यवस्था करना उद्यमिता विकास कार्यक्रम की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। उद्यमिता शिक्षण–प्रशिक्षण प्राप्त करके जो उद्यमी निकलता है उसके ज्ञान, कल्पना शक्ति, जोखिम क्षमता, निर्णय लेने की क्षमता, विवेक शक्ति आदि में वृद्धि होती है जिससे उसके व्यक्तित्व का विकास होता है और वह किसी भी व्यवसाय में प्रवेश करके उसको प्रगति के शिखर पर ले जा सकता है।

- **उद्यमिता संस्थानों की स्थापना:** उद्यमिता विकास कार्यक्रमों के कारण देश–विदेश में बहुत से उद्यमिता विकास संस्थानो की स्थापना हुई है जैसे भारत में उद्यमिता विकास के लिये विभिन्न प्रमुख संस्थान है– भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान, प्रबंधकीय विकास संस्थान, राष्ट्रीय उद्यमिता एवं लघु व्यवसाय विकास संस्थान, लघु उद्यमिता विकास मण्डल, लघु उद्योग सेवा संस्थान आदि।

- **संतुलित विकास:** जब उद्योगों का विकास कुछ शहरों तक सीमित रहता है तो समूचे देश का विकास रुक जाता है। उद्यमिता विकास कार्यक्रमों के माध्यम से पिछड़े एवं ग्रामीण क्षेत्रों में उपक्रमों की स्थापना को प्रोत्साहन मिला है जिससे राष्ट्र का संतुलित क्षेत्रीय विकास सम्भव हुआ है।

- **अन्य:** उद्यमिता विकास कार्यक्रमों की कुछ अन्य उपलब्धि निम्न है– (i) उत्पाद एवं उत्पादकता में वृद्धि, (ii) संसाधनों का कुशलतम उपयोग, (iii) बाजार का विस्तार, (iv) उपभोक्ताओं के लिये सस्ता सुन्दर एवं टिकाऊ उत्पादों की पर्याप्त मात्रा में उपलब्धता, (v) सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास, (vi) औद्योगिक संस्कृति का विकास, (vii) संस्थात्मक ढांचे का विकास, (viii) राष्ट्रीय आय में वृद्धि. (ix) आर्थिक सत्ता का विकेन्द्रीकरण, (x) जीवन स्तर में सुधार, (xi) उद्यमिता के नये नये अवसरों का विकास आदि।

निष्कर्ष

उद्यमिता विकास कार्यक्रम (EDP) एक ऐसा कार्यक्रम है, जो किसी व्यक्ति के उद्यमिता, चातुर्य, अभिप्रेरणा और क्षमताओं के विकास के लिये तैयार किया जाता है, ताकि व्यक्ति उद्यमी की भूमिका का प्रभावी ढंग से निर्वाह कर सके।

उद्यमिता विकास कार्यक्रम एक स्वस्थ रचनात्मक एवं गत्यात्मक मनोविज्ञान को जन्म देकर सकारात्मक सोच उत्पन्न करते हैं। उद्यमिता विकास कार्यक्रम काम की ओर प्रेरित करके नकारात्मक शक्तियों एवं विचारों को समाप्त करते हैं। कुछ व्यक्ति सवैतनिक कार्यों में लगे रहते हैं लेकिन उनके दिमाग में नौकरी–चाकरी करने के कारण उनके अंदर गुलामी/दासता घर कर जाती है। उद्यमिता विकास कार्यक्रमों के माध्यम से व्यक्ति कोई भी व्यवसाय करके अपना स्वयं का स्वामी बन जाता है।

स्वतंत्रता के पश्चात् उद्यमिता विकास के लिये सरकार ने औद्योगिक नीतियां तैयार की और समय–समय पर उनमें संशोधन भी किये ताकि देश में उद्यमियों को अनुकूल अवसर एवं वातावरण प्राप्त हो सके। भारत की अर्थव्यवस्था में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने के उद्देश्य से 24 जुलाई, 1991 को केन्द्र सरकार ने अपनी नवीनतम औद्योगिक नीति की घोषणा की। यह नीति उद्यमिता विकास की दृष्टि से एक युग परिवर्तनकारी दस्तावेज के रूप में स्थापित हुई।

सन्दर्भ

1. खुराना, अशोक (2010), उद्यमिता के मूलाधार, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली
2. गुप्ता, यू. सी. (2019), उद्यमिता विकास, कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल
3. नौलखा, आर० एल० (2010), उद्यमिता के आधारभूत तत्व, रमेश बुक डिपो, जयपुर
4. बघेल, सुनील सिंह (2019), उद्यमिता विकास कार्यक्रम (कमजोर वर्गों के सशक्तिकरण के संदर्भ में), सत्यम पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली
5. माथुर, एस. पी. (2008), भारत में उद्यमिता विकास, हिमालया पब्लिशिंग हाऊस, मुम्बई
6. विश्वकर्मा, हरिनारायण एवं दीक्षित, अजय (2014), भारत में उद्यमिता विकास – कार्यक्रम एवं संगठन, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स, वर्ष–2, अंक 7, जुलाई, पृष्ठ 1–8
7. सुधा, जी. एस. (2004), व्यावसायिक उद्यमिता, रमेश बुक डिपो, जयपुर
8. www.ediindia.org
9. www.iid.org.in
10. www.kviconline.gov.in
11. www.lubindia.com
12. www.mofpi.gov.in
13. www.msme.gov.in
14. www.niesbud.nic.in
15. www.udyami.org.in